व्यक्तित्व -

१. जन्म -

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म ४ मार्च १९२१ को बिहार राज्य में पूर्णिया जिले के " औराही हिंगना " नामक गाँव में हुआ। फूस की चौबारी मिट्टी लिपी भीतवाले घर में रेणुजी का जन्म हुआ था। रेणु के जन्म के बारे में एक अजब बात बतायी जाती है कि वे गर्भ में ग्यारह मास रहे थे। और तभी से बड़ी बूढ़ियों का दावा ही रहा कि लडका अजूबा ही होगा। और देखा जाय तो हुआ भी वैसा।

२. पुराना परिवार -

" करीब सौ साल पहले पूर्णिया जिले के " औराही हिंगना " गाँव में एक परिवार था। उस परिवार का नाम था " अमृत मण्डल "। अमृत मण्डल के तीन पुत्र थे। १) गोविन्द मण्डल २) शीलानाथ मण्डल ३) दीनानाथ मण्डल। इन्ही तीनों का परिवार इस गाँव में था। शीलानाथ के तीन पुत्र थे - फणीश्वरनाथ, हरिहरनाथ, महेंद्रनाथ। "

३. जन्मस्थल -

"औराही हिंगना " नामक गाँव बीस पच्चीस परिवारों का छोटासा गाँव है। यहाँ से लगभग चार मील की दूरीपर " सिमराहा " नामक रेल्वे स्टेशन है। वैसे देखा जाय तो औराही के दक्षिण में जो एक बस्ती है उसका नाम है " हिंगणा"। रेणुजी के प्रयत्नों से यहाँ एक पोस्ट ऑफिस खुला है। उसका नाम रखा गया है " औराही हिंगना" पोस्ट ऑफिस। सिमराहा उतरकर

औराही जानेवाली कोई भी व्यक्ति गाँव की झलक एक दृष्टि में नहीं पा सकता। वह धी रे - धीरे अपना अवगुंठन उतारता है। पूरा गाँव बागों, झाड़ियों और झुरमटों की ओट में छिपा हुआ है। यह गाँव पुराना है।

४. माता - पिता -

फणीश्वरनाथ रेणु के पिता " शीलानाथ मण्डल " क्षत्रिय वंश के एक सुखी और समृध्द किसान थे। वे साहित्य तथा राजनीति के शौकीन थे। इसी कारण वे नियमित रूप से अखबार और अन्य पत्र - पत्रिकाएँ लेने के लिए दो कोस पैदल चलकर सिमराहा स्टेशन आते थे। इसी प्रकार रेणुजी को भी पिता के समान पढाई के अलावा साहित्य - साधना, ललितकला और राजनीति में विशेष रुचि निर्माण हो गयी थी।

अपनी माँ पर रेणु को अगाध विश्वास था। रेणुजी ने जो कुछ लिखा अपनी माँ की प्रेरणा और इच्छा से ही लिखा है। जब कभी उसकी इच्छा के विरुध्द अपने चाहने पर कुछ लिखा तो उन्हें भयंकर मानसिक, शारीरिक संताप झेलने पड़े ऐसा रेणुजी कई बार कहा करते थे।

५. बाल्यकाल -

शीलानाथजी के तीनों भाईयों के परिवार में रेणुजी इकलौते पोता थे। इसलिए दादा-दादी का लाड़ प्यार उन्हें बहुत मिला दादीका प्यार तो रेणुजी के युवा होने तक मिलता रहा और रेणुजी ने इसका ऋण भरसक चुकाया भी। भाजो देवी दादीजी तीनों परिवारों के बच्चों की देखरेख अपने जिम्मे रखती। सांझ घिरते ही कभी ओसारे पर, कभी आँगन में कभी अलावतले सारे बच्चों को

हाककर जमा करती और तब तक शुरू होती किस्से कहानियाँ, राजारानी, भूतपिशाच, राक्षस - योगी की कहानियों का दौर या लोकगीतों की आलापें। सोते समय भी लोरियों के साथ इसका समाप्न होता। इस पृष्ठभूमि का लाभ रेणुजी को मिला और लोककथा, लोकगीतों के सारे अवयव उनके साहित्य में सिमट आये। खुद रेणुजी लोकगीतों के गायन में बचपन से ही प्रवीण हो गये और लोककथाएँ कंठस्थ थी। बाल्यकाल से ही उन्हें इसमें रुचि लगी। इसीका प्रतिबिंब ही उनके साहित्य में है।

६· शिक्षा -

सर्वप्रथम रेणुजी को प्राथमिक विदयालय की शिक्षा के लिए गठबनैली में दाखिल कराया गया। लेकिन यहाँ उनका मन नहीं लगा। इसलिए उन्हें सिमरबनी की प्राथमिक कक्षा में उनका नामांकन हुआ। " स्कूल में प्रविष्ट होने और गठनैली, हलहोलिया, या सिमरबनी में पढने से पूर्व ही रेणुजी बंगला भाषा सिख चुके थे। ······ उन दिनों फूदोबाबू नाम के एक बंगाली डाक्टर बारा - मानिकपूर में रहते थे। उनका शीलानाथजी के परिवार से बड़ा अपनापन था। और दैनिक संपर्क होता रहता था। रेणुजी इसी फूदोबाबू डाक्टर से बंगला सीख गये। जब कि उन्हें अपनी पाठ्य-पुस्तकों से जरा भी रुचि नहीं रहती।" २

किशोर रेणु को बारह वर्ष की आयु में अररिया उच्च विद्यालय के आठवें दर्जे में दाखिल कराया गया। लेकिन वहाँ वे बंगाली लडकी के प्रेम के चक्कर में हटाकर फिर से फारबिसगंज के स्कूल में दाखिल किया। दो वर्षो तक रेणुजी एकेडमी फारबिसगंज में शिक्षा प्राप्त करते रहे।

७. विद्रोही और क्रान्तिकारी रेणु -

रेणुजी के विद्रोही स्वभाव और क्रान्तिकारियों के साथ उनके गहराते सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुये प्राचार्य ने उन्हें स्कूल से हटाना चाहा। संयोगवश उसी समय रेणुजी की मुलाकात बी॰ पी॰ कोईराला से हुयी। रेणुजी की कोइराला से हुयी भेंट, प्राचार्य की शीलानाथ जी की दी गयी सलाह, और खुद रेणुजी की यायावरी प्रवृत्ति - इन सभी कारणों ने रेणुका प्रवास एक आंदोलन से कटकर क्रान्ति से जुडने की पृष्ठभूमि तैयार की। परिणाम यह हुआ कि रेणुजी को एकदम भारतवर्ष की सीमा से ही बाहर कर दिया गया। और उन्हें विराटनगर के तत्कालीन उच्च - विद्यालय में दाखिल किया। विराटनगर नेपाल में रेणुजी की शिक्षा कोईराला परिवार में रहते हुये ही चली और बाद में बनारस तक यह साथ रहा।

बनारस में शिक्षा प्राप्त करते हुये रेणु युवक हो चुके थे। लगभग डेढ साल तक वे बनारस रहे। लेकिन वहाँ उन्हें कॉलेज में सफलता नहीं मिली। कुछ आंतरिक कारणों से कोईराला परिवार के साथ रेणुजी का संपर्क भी टूट गया।

८. बनारस के दिन -

उपाध्यायजी का कहना है कि " आचार्य नरेंद्रदेव, युसुफ मेहरअली, डा॰ राममनोहन लोहिया, जयप्रकाश नारायण आदि से लेकर भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसे प्रकट अप्रकट व्यक्तियों के प्रति मानसिक लगाव की दृष्टि से बनारस में गुजरे कुछेक वर्ष " रेणु " के लिए बडे महत्त्वपूर्ण साबित हुये साहित्य साधना के संस्कार भी तभी से गहरे हुये। " ३

इससे स्पष्ट है कि बनारस में गुजरे कुछेक वर्ष रेणु के लिए बड़े महत्त्वपूर्ण साबित हुये। उन्होंने पढाई के अलावा साहित्य साधना ललित कला, राजनीति की ओर विशेष ध्यान दिया। परिणामत: डिग्रीवाली पढाई से रेणुजी का मन ऊब गया। इस तरह उनकी शिक्षा अधूरी रह गयी। परंतु यह टाला नहीं जा सकता कि उनके भीतर एक कर्मठ सेनानी का विकास हो गया।

९. प्रेम और विवाह -

रेणु को बारह वर्ष की आयु में अररिया विश्वविद्यालय में दाखिल किया परंतु उनका वहाँ मन नहीं लगा। पढाई की अपेक्षा अन्य बातों की ओर वे ज्यादा ध्यान देने लगे। वहाँ वे एक बंगाली लडकी के प्रेम में फँस गये। वे बहुत कुमार्गी हो गये कि अपने माँ के पैसे और गहने भी उस लडकी को देने लगे। इसके परिणाम स्वरूप पिताजी ने उन्हें वहाँ से हटाकर फारबिसगंज के स्कूल में दाखिल किया। उनका मन वहाँ भी नहीं लगा। इसी कारण उन्होंने विषैली चीज खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की।

" उनकी आत्महत्या का कारण कुछ लडकों के साथ हुआ झगडा बताते हैं लेकिन गणेशजी की राय में यह एक असफल प्रेमी का आत्मघात करने का प्रयास था। उनके मुताबिक अररिया से आने के बाद से ही रेणु के स्वभाव में परिवर्तन आने लगा। वे गुमसुम, उदास और मुर्झाये से रहने लगे। इन्हीं मानसिक परिस्थितियों में उन्होंने एक दिन अफीम खा ली और बड़ी मुश्कील से उनके प्राण की रक्षा की जा सकी। " ४

रेणु की पहली प्रेयसी अररियावासिनी बंगालीन थी। दूसरी बार वे बी• पी• कोईराला की बहन इंदिराजी के प्रेम में पड़ गये थे।

सन १९४२ के आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण उन्हें तीन साल की कैद हो गयी। कैद से छूट जाते ही रेणु का प्रथम विवाह १९४५ में रेखादेवी के साथ हुआ। पुत्र की क्रान्तिकारी वृत्ति और स्वच्छंदता पर अंकुश लगाने के लिए उनके जेल से छूट आते ही चटपट विवाह कर दिया। दुर्भाग्य यह कि रेखादेवी को अरधंगा हो गया। बीमार पत्नी की रेणुजीने बहुत सेवा की। अंतत: रेखा-देवी के माता-पिता उसे घर ले गये। और वहीं पर उसकी मृत्यु हो गयी। एक बालीका को जन्म देकर रेखादेवी परलोक चली गयी। " रेणुजी के जीवन में यह एक ऐसा गंभीर सदमा था जो चोट खाये फेफडे में और और धुन की तरह पैठ गया। और धीरे - धीरे उन्हें चबाने लगा। निश्चय ही उनमें कुछ विलक्षण शीलानाथजी को दिख पड़ा होगा कि उन्होंने १९५० बीतते - न - बीतते रेणुजी का दूसरा विवाह करवा दिया श्रीमती पद्मादेवी के साथ। " ५

इसी समय पद्मावती देवी और रेणु के परिवार में तनाव का वातावरण था। तनाव का कारण यह बताया जाता है कि विवाहित होने के बाद भी रेणु के एक बंगाली नर्स के साथ प्रेमसंबंध चल रहे थे। इसी नर्स के साथ उनका तीसरा विवाह संपन्न हो गया। पिता की मृत्यु और पिता के श्राध्द कर्म के दिन उनके भाई महेन्द्र की मृत्यु हो गयी। " पिता और भाई की एक साथ हुयी मृत्यु ने रेणु को भीतर से तोड डाला और एक बार फिरसे उनके फेफडों का घाव हरा हो गया। दो मास के भीतर ही भीषण रूप से टी• बी• से ग्रस्त होकर उन्हें एक बार फिर पटना अस्पताल और

लतिकाजी की शरण लेनी पड़ी। एक दूसरा संयोग फिर घटित होने की पृष्ठभूमि में जुटा गया।" ६ पटना अस्पताल की लंबी बीमारी के कारण रेणुजी लतिकाजी के काफी निकट आये। यहाँ तक कि उन्होंने अस्पताल से छुटने के बाद लतिकाजी के साथ तिसरा विवाह किया। रेणुजी लतिकाजी से तीन वर्ष छोटे थे लेकिन उन्हें वे काफी आदर-सम्मान और स्नेह देते थे। निष्कर्षत: उनका वैवाहिक जीवन अस्थिर था।

१०. राष्ट्रप्रेमी रेणु -

रेणु के मन में जनतंत्र के प्रति गहरी आस्था बचपन से ही पैदा हो गयी थी। और वे जीवनभर इसके लिए कटिबध्द रहे। रेणु के बचपन की एक घटना उनके राष्ट्रप्रेम को उजागर करती है। सन १९३० - ३१ की बात है। उन दिनों रेणु अररिया हायस्कूल में चौथे दर्जे में पढते थे। म. गांधी की गिरफ्तदारी की खबर मिलतेही सारा बाजार और स्कूल बंद हो गया। छात्रों ने दूसरे दिन हडताल की। रेणुजी स्कूल जानेवालों को हाथ जोडकर समझा रहे थे। स्कूल के असिस्टंट हेडमास्टर को भी स्कूल जाने से रोका। परिणामत: हेडमास्टर ने अशोभनीय बर्ताव के लिए सारे स्कूल के छात्रों के सामने रेणु को दस बेत लगाने की कड़ी सजा सुनवायी। कुछ छात्रों ने तथा अध्यापकों ने उन्हें माफी माँगने की सलाह दी। लेकिन रेणु माफी माँगने के लिए तैयार नहीं हुये। जैसे ही " मास्टर साहबने बेत मारना शुरू किया, " वन " और रेणुजी ने " वंदे मातरम् " का नारा लगाया। और इसे अन्य छात्रों ने दुहराया। " टू " पर " महात्मा गांधी की जय " और "थ्री" होते - होते इलाके के मशहूर सुराजी सत्याग्रही " चुन्नीदास गुसायी " के नेतृत्व में जनता का एक जुलुस स्कूल के आहाते में घुस आया और छुट्टी की घंटा बजा देनी पड़ी। " ७

इससे स्पष्ट होता है कि बचपन से ही रेणु काफी निर्भीक और सत्याग्रही थे। अन्याय के खिलाफ लड़ने का जो भाव नेपाल के कोइराला परिवार के संपर्क से पैदा हुआ वह आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन में विकसित हुआ। किशोर रेणु जब नवम वर्ग में थे तो वे काँग्रेसी कार्यकर्ता तिवारीजी के सम्पर्क में आये थे। युवा रेणुजी की प्रथम गिरफ्तारी बनारस में हुयी थी। वहाँ उन्हें क्रान्तिकारी होने के सन्देह में गिरफ्तदार किया गया। इसका कारण था उनका बहुभाषी होना। उन्हें बंगाली; नेपाली, मैथिली, आदि भाषाएँ आती थी। उन्होंने फूदो बाबू और बंगाली प्रेयसी से बंगाली सिखी थी। नेपाल में पढ़ते हुये और कोइराला परिवार में रहकर उन्होंने नेपाली भी खूब सीख ली थी। मैथिली उनकी मातृभाषा जैसी ही थी। कोई भी भाषा वे सहजता से बोलते थे। परिणामस्वरूप बनारस के गुप्तचरों को शक हुआ। और उन्हें क्रान्तिकारी होने के सन्देह में गिरफ्तदार लिया परंतु शक दूर होते ही उन्हें छोड़ दिया।

काशी में रेणु आचार्य नरेंद्रदेव और डा• राममोहन लोहिया के संपर्क में आये उसी समय राष्ट्रीय आंदोलन की लहरें चारों ओर फैल रहीं थीं। रेणु भी उसमें शामिल हो गये। विराटनगर के आदर्श विदयालय में उन्हें स्वतंत्रता और निर्भिक्ता की शिक्षा मिली थी। इसके फलस्वरूप रेणु के भीतर एक कर्मठ सेनानी का व्यक्तित्व विकसित हो गया। १९४२ के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के अपराध में उन्हें तीन वर्ष की कैद की सजा दी गयी। भागलपुर जेल में राज्य के

करते हुये जेल गये। वे बीमारी के कारण शरीर से कमजोर जरूर हो गये थे। लेकिन मन से कभी कमजोर नहीं हुये। उनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता किसी पदलिप्सा से प्रेरित नहीं थी।

रेणुजी राष्ट्रप्रेमी होते हुये भी निस्वार्थी राजनीतिज्ञ थे। इसी कारण ही वे प्रसिध्दि पा चुके है।

१·११ रेणजी का साहित्य - संसार -

रेणुजी का साहित्य बड़ा ही समृध्द बन गया है। इनका साहित्य आंचलिकता की दृष्टि से सफल बन गया है। इनका साहित्य आंचलिकता के परिवेश को सजीव बनाता है। इन्होंने अपने साहित्य में " रिपोर्ताज " और " संस्मरण " को भी लिया है।

उपन्यास -

रेणु के कुल मिलाकर पाँच उपन्यास है। इन पांच उपन्यासों के बीच " मैला आंचल " (१९५४) के प्रकाशन को हिंदी साहित्य क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण घटना माना है। इस प्रथम उपन्यास ने ही रेणु को साहित्य क्षेत्र में अजीबसा महत्त्व प्राप्त कर दिया। मैला आंचल के प्रकाशन से ठीक तीन वर्ष बाद रेणुजी का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास " परती परिकथा " (१९५७) का प्रकाशन हुआ। यह उनकी दूसरी कृति मैला आंचल से भी ज्यादा श्रेष्ठ बन गयी।

इसके अंतर्गत संघर्ष के साथ नव-निर्माण का स्वर लबालब भर दिया है। इस उपन्यास के बाद रेणुजी के और तीन उपन्यासों का प्रकाशन हुआ। १) जुलुस (१९६५) २) दीर्घतपा (१९६३) ३) कितने चौराहे (१९७१)

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का संक्षेप में विवेचन -

१·११·१ मैला आंचल - (१९५४)

मैला आंचल में कोई अधिकारिक कथा नहीं है। मेरीगंज में रहनेवाले लोगों के जीवन कीभिन्न-भिन्न उपकथाओं और घटनाओं को कालखंड और परिवेश में अभिव्यक्त किया है। ऐ कथा मूलत: व्यक्ति चरित्रों की विशिष्ट कथा नहीं है। तो यह पूरे मेंरीगंज की कथा है। उन्होंने स्वयं कहा है- " इसमें फूल भी है, शूलभी है, धूल भी है, गुंलाल भी, कीचड भी है, कुरुपता भी- मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया। " ८

इस उपन्यास की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें निरंतर बदलते हुये समाज के गांव की आत्मगाथा है, और यह गांव उत्तर भारत के किसी भी गांव का प्रतिनिधित्व कर सकता है। यह एक पिछडे गाँव की कथा है। रेणु ने मैला आँचल में आंचल विशेष की कथा ही नहीं कही तो अपने सशक्त व्यंग्य शैली से कथाको नियोजित किया है। उपन्यास का प्रारंभ ही " मेरीगंज " में मलेरिया सेंटर के खुलने की सूचना से होता है। आरंभ के परिच्छेद में ही

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR.

मेरीगंज की मानसिकता को स्पष्ट प्रतिपादित किया है। मेरीगंज में प्रधान रूप से चार जाति के लोग रहते हैं। इन चार टोलियों में भी विभाजन हुआ है। इसके कारण यह अन्तर्विरोधग्रस्त वर्ग-चेतना की की कहानी बन जाती है।

१·११·२ परती - परिकथा - (१९५७)

रेणुजी का यह दूसरा सजग और सशक्त उपन्यास है। परती - परिकथा में शीर्षक के अनुसार ही परानपुर गाँव की वीरान, धूसर, पतिता भूमि, बन्ध्या धरती का आजादी के बाद का चित्रण किया है। उपन्यास के शुरू में ही लेखक ने परती का परिचय इस प्रकार दिया है। - " धरती नहीं, धरती की लाश जिसपर कफन की तरह बालूचरों की पंक्तियाँ फैली हुयी हैं। उत्तर नेपाल से शुरू होकर दक्षिण गंगा तट तक पूर्णिया जिले के नक्शे को दो अलग भागों में विभक्त करता हुआ फैला - फैला यह विशाल भूभाग लाखों एकड भूमि, जिसपर सिर्फ बरसात में आशा की तरह दूब हरी हो जाती है।"[९]

आजादी के बाद परानपुर गाँव में जो नवजागरण हुआ उसे स्वर देने का कार्य इसके व्दारा किया है। इस उपन्यास के व्दारा रेणुजी ने सिर्फ परानपुर की कथा को ही उजागर नहीं किया तो परती के देहातियों का भी चित्रण सजगता से किया है। परिकथा का केंद्र परानपुर गाँव है। अव्यवस्थित राजनीति, विकृतियाँ, संघर्ष, सामन्ती परम्पराएँ आदि कठिन परिस्थितियों के बीच भी रेणुजी ने नवजागरण किया है। रेणु की सबसे बड़ी शक्ति इनकी

सूक्ष्म दृष्टि है। इन्होंने बिल्कुल सूक्ष्मता से आजादी के बाद के परानपुर गाँव का चित्रण किया है। इसी के कारण ही इनका उपन्यास सजीव बन पड़ा है। परती परिकथा की कथावस्तु आस्था और विश्वास के स्वरों से परिपूर्ण अपनी विषमताओं से संघर्ष करता हुआ नवनिर्माण का स्वर है। रेणुजी ने अपनी इस कृति के द्वारा लोगों को चमत्कृत कर दिया है।

१.११.३ <u>दीर्घतपा - (१९६३)</u>

वैसे देखा जाय तो दीर्घतपा यह नायिका प्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से कुमारी बेलागुप्ता के हृदय की यथार्थ रूप से पहचान हो जाती है। बेला गुप्ता ने अपना सारा जीवन समाज की सेवा करने में लगा दिया। उसने अपने रूप और यौवन की ओर भी ध्यान नहीं दिया। तो उसका एकमात्र व्रत यहीं था कि समाज और देश की सेवा करें। और सचमुच ही उसने सारा जीवन इसी में ही बिता दिया। उसने आजादी के बारे में व्यंग्य करते हुये कहा है कि क्या यही वह आजादी है, जिसके लिए अनगिनत लोगों ने जेलें काटी और अपने प्राणों की आहुति दी। लोग सत्य की ओर बिल्कुल नहीं देखते और सिर्फ कहते रहते हैं कि सच्चायी, सत्य का लोप ही हो रहा है। समाज की स्थिति ही ऐसी होने लगी है कि अच्छाई पर से या सत्यता पर से विश्वास उठता जा रहा है। और सभी ओर असत्य, बुराई की ही विजय हो रहीं है। यहीं कटु सत्य रेणुजी बेला गुप्ता के माध्यम से दिखाना चाहते है।

है। मनुष्य आज अपने स्वार्थ के लिए जान भी बेचना चाहता है। क्योंकि सारा समाज ही स्वार्थ मयी बनने लगा है।

आज भी समाज में बेला गुप्ता जैसी समाजसेविकाएँ है तो उनके प्रति श्रध्दा रखनी चाहिए। जब ऐसा हो जायेगा तभी आजादी का सहीं अर्थ सच्ची दृष्टि से साबित होगा। इस उपन्यास का उद्देश्य इतनाही है कि अच्छायी के बिच मनुष्य में आस्था को आत्मीयता को बनाए रखना। और इसी दृष्टि से यह उपन्यास सफल बन गया है।

१.११.४ जुलुस - (१९६५)

जुलुस उपन्यास में रेणुजी ने विस्थापितों की समस्याओं और उनके दु:ख दर्द के साथ आजादी के बाद गावों में पनपने वाले देश के दर्द को भी स्वर दिया है। यह पूर्वी बंगाल से आये शरणार्थियों और गोड्यिर गाँव की कहानी है। जुलुस की कथा नबीनगर कालोनी और गोड्यिर गाँव की मिलीहुयी कहानी है। आजादी के बाद तेजी से समृध्द होने की लालसा ने किस तरह लोगों को तस्करी की तरफ आकर्षित किया इसका हुबहु चित्रणकिया है। परिणामस्वरुप धनविहीनलोग भी धनवान बन गये। उपन्यास की मानसिक भूमि को स्पष्ट करते हुये उन्होंने लिखा है कि " दिनरात - सोते बैठते, खाते - पीते - मुझे लगता है कि एक विशाल जुलुस के साथ चल रहा हूँ।

इस भीड से अलग होने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है। नहीं लेकिन ....
मैं छिटक कर अलग नहीं हो सकता।" १०

इससे रेणुजी स्पष्ट करना चाहते है कि मनुष्य यह समाज-प्रिय प्राणी है. वह समाज में ही रहना पसंद करता है। सूक्ष्मता की दृष्टि से देखा जाय तो उनका यह उपन्यास पहले उपन्यासों की तुलना कम महत्त्वपूर्ण है।

१.११.५ <u>कितने चौराहे (१९७१)</u>

रेणुजी का यह उपन्यास राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास में सन १९४२ में म. गांधी की " करो या मरो " पुकार को सुनकर " भारत छोडो " आंदोलन में कूद पडनेवाले नवजवानों की कथा है। यह रेणुजी का अंतिम उपन्यास है। इस उपन्यास को उन्होंने किशोर शहीद ध्रुव कुंडू को समर्पित किया है। जिसने अपने देश का झंडा फहराते समय गोली खायी थी। इन्होंने आजादी की लड़ाई के दिनों में उठनेवाले नव- जागरण को चित्रित किया है। आजादी के बाद जो नवजागरण हो रहा था उसके कई स्वरूप या प्रकार थे। एक ओर से गांधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह का सिलसिला चल रहा था तो दूसरी ओर से भावी भारत की निर्मिति की अपेक्षा से नवयुवकों को दृढ बनाने का प्रयास चल रहा था। आदर्शवादी क्रान्तिकारी

छात्रा युवा संगठनों के क्रिया कलापों और संघर्षों की कहानी चित्रित है। इस उपन्यास में अच्छे चरित्रों का निर्माण किया है।

१·११·६ रेणु का कथा साहित्य -

रेणुजी का उपन्यास साहित्य जितना समृध्द और महत्त्वपूर्ण है उतनाही कहानी साहित्य क्षेत्र भी समृध्द और सजग है। इनकी कहानियाँ आंचलिकता का परिवेश सजीव रूप में चित्रित करती है। स्वातंत्र्योत्तर काल की चेतना ने मानव जीवन के मूल्यों को किस प्रकार बदल दिया इसका जीता-जागता चित्रण इनकी कहानियों में है। इन्होंने गांव और मनुष्य दोनों को यथार्थ परिवेश में तटस्थ भावना से देखने का प्रयास किया है। इसी के कारण गाँव को यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। कहानी, उपन्यास के साथ - साथ उन्होंने रिपोर्ताज, संस्मरण, नेपाली क्रान्ति कथाएँ भी लिखी। रेणुजी के कुल - मिलकर पांच कहानी संग्रह है।

१) ठुमरी (१९५९) २) आदिम रात्रि की महक (१९६७) ३) अगिनखोर (१९७३) ४) अच्छे आदमी ५) एक श्रावणी दोपहरी की धूप

१·११·७ ठुमरी -

यह इनका नौ कहानियों का संग्रह है। ये नौ कहानियाँ

रेणु ने बहुत ही परिश्रम के साथ लिखी हैं। इन कहानियों को पढते समय मनुष्य का ह्रदय भी द्रवित हो जाता है। साहित्य में सच्चे अर्थ से जब वास्तविकता आ जाती है तभी उसी प्रकार का साहित्य पाठक के मन को सदमा पहुँचता है। और पाठकों के मन को द्रवित करना यहीं इनकी कहानियों की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। " लाल पान की बेगम " या " तीसरी कसम " जैसी कहानियों में पीडा भी है और आनंद उल्लास के मुखरित कलख गान भी है। जीवन के द्वारा स्पष्ट किया है। इस संग्रह नें ठुमरी नाम की कोई कहानी नहीं है तो यह ठुमरी नाम का कहानियों का संग्रह है।

१•११•८ <u>आदिम रात्रि की महक</u> -

रेणुजी का यह दूसरा कहानी संग्रह हैं। इसमें चौदह काहानियों संग्रहीत की गयी है। इस संग्रह की कहानियों में होनेवाले पात्रों के वाद - संवाद या कथावस्तु पाठक के मन को प्रभावित करती है। और यही महत्त्वपूर्ण वैशिष्ठ्य उनके इस कहानी संग्रह का हैं। पात्रों के संभाषण उनके चरित्र के अनुकूल है। और कथावस्तु में भी सच्चायी भर दी गयी है।

१·११·९ एक श्रावणी दोपहरी की धूप -

यह रेणुजी का असंकलित कहानियों का संग्रह है। प्रस्तुत संग्रह की पहली २३ अप्रैल १९४५ के " साप्ताहिक विश्वमित्र " में प्रकाशित हुयी थी। और अंतिम कहानी १९७३ में प्रकाशित हुयी थी। हम भी इनके कहानी के पात्रों के साथ उदास और उल्लासित हो उठते है। रेणु की कहानियों में कोई क्रमिक विकास या -हास नहीं दिखायी देता। वस्तुगत विविधता, भाषिक संरचना के तत्व, ध्वनियों के प्रति लय, लय के प्रति रूझान, प्रयोग धर्मिता आदि विशेषताएँ भी इस संग्रह में देखने को मिलती हैं। पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित ये प्राय: उनकी प्रथम रचनाएँ है। इसलिए इनका दोहरा महत्त्व भी है।

१·११·१० आत्मपरिचय -

यह पुस्तक चार खंडों में विभाजित हैं। १) आत्म-रचना २) आत्मसंस्मरण ३) आत्मवक्तव्य ४) व्यक्तिगत निबंध। एक जागरूक लेखक के रूप में कभी वे लेखन और राजनीति के कोमल रिश्ते पर विचार करते हुये दिखायी देते हैं तो कभी अपनी रचनाओं की समकालिक पृष्ठभूमि को लेकर हुयी टीकाओं को सह लेते हैं। तो कभी वे बेचैन भी दिखायी देते है।

१•११•११ अच्छे आदमी -

यह भी अप्रकाशित कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में व्यक्ति चित्रात्मक तीन कहानियाँ हैं। इसके पात्र हिन्दी साहित्य के लिए बिल्कुल नये है। राजनीतिक व्यंग्य की भी तीन कहानियाँ है। " पार्टी का भूत ", धर्मक्षेत्र - कुरुक्षेत्र, प्रतिनिधि चिट्ठियाँ, नये सवेरी की आशा, जीत का स्थान ये कथाएँ रिपोर्ताज शैली में लिखी गयी भिन्न तरह की कहानियाँ है। " नये सवेरे की आशा " में सिर्फ किसानों का ही चित्र नहीं है तो किसान - मजदूरों का भी वास्तविक चित्रण है। " जीत का स्वाद " यह खेल कथा है। " नेपथ्य का अभिनेता ", " जहां पमन को गमन नहि " मैथिली भाषा की कहानियाँ भी रेणुजी ने लिखी हैं।

१•११•१२ नेपाली क्रांति की कथा (१९७७)

इस पुस्तक में नेपाल की राणाशाही के अत्याचारों और दमन के विरुद्ध होनेवाले जनता के सशस्त्र संग्राम की कथा है। इसमें सात रिपोर्ताज संग्रहित है। रेणुजी ने रिपोर्ताज में क्रान्तिकारियों की विविध मनस्थितियों का गतिविधियों का चित्र अंकित किया है। उन्होंने क्रान्ति में स्वयं सहभाग लिया था इसीलिए वे लेखक तो बने ही

साथ साथ क्रान्ति योध्दा भी बन गये। स्वयं सहभागी होने के कारण इनके रिपोर्ताजों में सत्यता या यथार्थता है। उन्होंने सिर्फ देखा या सुना नहीं है तो स्वयं भोगा है। इसी कारण इनके रिपोर्ताज यथार्थवादी है। उन्होंने क्रान्ति की पीड़ा या बेचैनी को यथार्थ रूप से भोगा है। इसीलिए इनके रिपोर्ताजों का यह मूर्त रूप है।

१•११•१२ रिपोर्ताज और संस्मरण –

रिपोर्ताज और संस्मरण का हिन्दी साहित्य में दुगुना महत्त्व है। रेणुजी ने अपने उपन्यास कहानी साहित्य के साथ रिपोर्ताज और संस्मरण का भी निर्माण किया।

१•११•१४ ऋणजल – धनजल – (१९७७)

यह रेणुजी की महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें उन्होंने रिपोर्ताज और संस्मरणों का संकलन किया है। ऋणजल – धनजल के रिपोर्ताज

उनके अनुभव से बने है। इस संग्रह में बाढ से सम्बन्धित पांच और सूखे से सम्बन्धित छह रिपोर्ताज संग्रहीत हैं। उन्होंने कहानी लेखन भी किया। कहानी लिखते समय उन्होंने समाज को आधारस्तंभ बना दिया। बाढ से संम्बन्धित रिपोर्ताज के नाम है - " कुत्ते की आवाज ", " पंछी की लाश ", "मानुष बने रहो ", " जो बोले सो निहाल ", कलाकारों की रिलीफ पार्टी" आदि। बाढ के समय मनुष्यों के मन की स्थिति किस प्रकार हो जाती है, इसका उन्होंने यथार्थ चित्रण खिंचा है। उसी प्रकार सूखे से ग्रस्त क्षेत्रों की भौगोलिक स्थितियों अभावग्रस्त त्रस्त लोगों के तन - मन का यथार्थ उद्घाटन किया है। इनके रिपोर्ताज केवल कथात्मक नहीं है तो स्वयं के अनुभव के द्वारा लिखे गये है। इसके अलावा उन्होंने " वन तुलसी की गंध " तथा " श्रुत अश्रुत पूर्ण " नामक संस्मरण भी लिखे। रेणुजी ने चाहे जो कुछ भी लिखा वह असत्य या झूठा या बिनाधार का नहीं लिखा। तो उन्होंने सोच समझकर समाज में जो देखा, जो भोगा इसीका सही चित्रण किया है। " साहित्य समाज का दर्पण है। " इसके आधारपर यदि इनका साहित्य कसा जायेगा तो पूरे अर्थ में वह खरा उतर जायेगा।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

रेणु की बीमार अवस्था -

कहा जाता है कि जब शारीरिक स्वास्थ्य ठीक होता है

मन भी अच्छे रूप से कार्यरत रहता है। रेणुजी के बारे में कहा जाय तो इनका शरीर स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, परंतु मन बहुत प्रबल था। इसी के आधारपर वे साहित्य लिख पाये। युवा अवस्था से ही इनके बीमारी होने का आरंभ हो गया था। १९४२ के आन्दोलन में सहभाग लेने के कारण जब उन्हें पकडा गया तो उन्हें तीन साल की कैद हो गयी। इस समय वे जेल में ही बीमार पड गये। अपील करने के बाद शिक्षा में छूट मिली। उन्हें चिकित्सा के लिए हजारी बाग से पटना लाया गया। फिर भी एक बार जब वे पकडे गये तो उन्हें बंदुक के कुन्दे से पिटा गया। इसमें उनका फेफडा चूर-चूर हो गया और जेल में ही वे मरणासन्न हो गये। अस्पताल से छुटकर घर आने के बाद उनका विवाह रेखादेवी के साथ किया गया। दुर्भाग्य से रेखादेवी की मृत्यु हो गयी उन्हें गंभीर सदमा पहुँचा।

" सन १९५० में पिता और भाई की एक साथ हुयी मृत्यु ने रेणु को भीतर से तोड डाला और एक बार फिर से उनके फेफडों का घाव हरा हो गया। दो चार मास के भीतर ही भीषण रूप से टी॰बी॰ से ग्रस्त होकर उन्हें एक बार फिर पटना अस्पताल और लतिकाजी की शरण लेनी पड़ी। "
११

टी॰ बी॰ की भयंकर अवस्था देखकर घर के सभी लोग भाग गये। लेकिन लतिकाजी ने उन्हें साथ देकर रोग मुक्त किया। इसके बाद

रेणुजी के सभी स्वजनों ने लतिकाजी की झूठी - मूठी प्रशंसा की। इसके बाद रेणुजी को अंतडी का कैंसर हो गया। इसके लिए उन्हें राजेन्द्र सर्जिकल वार्ड में भरती कराया गया।

मृत्यु -

अंतडी का कैंसर होने के कारण उन्हें राजेंद्र सर्जिकल वार्ड पटना में भिजवा दिया। परंतु दुर्भाग्यवश उनकी वह कैंसर की बीमारी ही उन्हें खा चुकी। पेट का कैंसर खुलना नहीं चाहिए। प्रतिरोधक के अभाव में वह घातक होता है। परंतु कैंसर में हवा लग जाने के कारण उसका संक्रमण पूरे शरीर पर हो गया। इसी कारण वे उन्नीस दिन तक बेहोश रहे। और ११ अप्रैल १९८० में इस महान साहित्यकार की जीवन ज्योत बुझ गयी।

निष्कर्ष -

फणीश्वरनाथ रेणुजी का जीवन संघर्ष और कठिनाइयों के बीच बँधा हुआ था। स्वयं का जीवन अंधेरे में चलती हुयी मशाल के समान होते हुये भी उन्हें समाज के प्रति आस्था थी। इसका जीता जागता चित्रण उनके साहित्य में देखने मिलता है। इनकी " प्रजातंत्तक" नामक कहानी समाज चित्रण की दृष्टि से सुंदर है। " अग्निखोर " में भी उन्होंने " व्यभिचारी " " तूर्यनाथ " का चित्रण किया है। जो समाज का कटु सत्य

है। मैला आंचल में अछूत स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों का चित्र लिखा है। तो एक ओर से साधु, स्वार्थी, जमींदार, साहूकारों पर टीका टिप्पणी की है। क्रान्ति में स्वयं भाग लेने के कारण उनके रिपोर्ताज में अनुभव की प्रामाणिकता है। परती - परिकथा उपन्यास में रसप्रिया, पंचलाईट, लफडा कस्बे की लडकी जैसी कहानियों में रेणुजी ने भारत देश की कथा व्यथा का चित्रण किया है। जिस गाँव में उन्होंने अपना पूरा जीवन बिता दिया उस गाँव का जिता जागता चित्रण रेणुजी ने अपने साहित्य में किया।

रेणुजी राष्ट्रप्रेमी थे। इनकी राष्ट्रप्रेम की वृत्ति का परिचय अररिया हायस्कूल के जीवन में मिलता है। उस समय वे केवल चौथे दर्जे में पढते थे। इससे ये भी स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में ही रेणु ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया था। चुनाव में पराजय और उसमें होनेवाली अनियमितताओं ने " रेणु के भावुक मन को काफी प्रभावित किया। चुनाव के दौरान हुये अनुभवों के सम्बन्ध में उन्होंने कहा था कि, " यही सब एक लेखक के लिए " कच्चे माल" का काम करते हैं। खासकर मेरे जैसे लेखक के लिए चुनाव हार गया लेकिन ढेर सारे अनुभवों के साथ पटना आया हूँ। " १२ रेणुजी ने युवावस्था में ही राजनीति में सहभाग लिया था। इसी के कारण वे साहित्य को समाज का दर्पण बना सके। रेणुजी राजनीति में घुल मिल कर शामिल हो गये थे।

रेणुजी ने चुनाव के समय भी सक्रिय सहभाग लिया। इसका उदाहरण यदि हम देखना चाहते हैं तो दिसंबर १९७६ से रेणु को अस्पताल भर्ती किया गया। मार्च १९७७ में जब लोकसभा का चुनाव आया तो वे आपरेशन टालकर अस्पताल से बाहर आ गये। बाहर आकर उन्होंने जनता पार्टी के लिए पर्चे तथा पोस्टर तैयार किये। सभाओं का कार्यक्रम बनाकर युवकों को भी प्रेरित किया। वे चुनाव में व्यापक स्तर पर जनता पार्टी की विजय सुनना चाहते थे। और हुआ भी वैसा ही। इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य की जो अदम्य इच्छा होती है वह अंतिम दम तक जरूर पूरी हो जाती है। इसका यह जीता - जागता चित्र है। इस विजय को देखकर उनकी आत्मा को शांति मिली थी। परंतु यह शांति चिरशान्ति में बदल गयी। जिस दिन लोकसभा के नेता का चुनाव था उसी दिन रेणुजी का आपरेशन था। परंतु अनर्थ यह हो गया कि वे उसके बाद कुछ देख भी नहीं सके और सुन भी नहीं सके। क्योंकि वे उन्नीस दिन बेहोश ही रह गये। और इसी प्रकार का महान साहित्यकार ११ अप्रैल को हमेशा के लिए चले गये।

संदर्भ -

१. रेणु का रचना संसार, संपादक - विजय, पृष्ठ ११

२. रेणु का रचना संसार, " - " , पृष्ठ १३

३. आंचलिक उपन्यासकार और रेणु, डा॰ सत्यनारायण उपाध्याय, पृष्ठ - ५९

४. रेणु का रचना संसार, संपादक - विजय, पृष्ठ - १५

५. रेणु का रचना संसार, " - " , पृष्ठ - २०

६) रेणु का रचना संसार, " - " , पृष्ठ - २१

७. आंचलिक उपन्यास और रेणु, डा॰ सत्यनारायण, पृष्ठ - ६१

८४ मैला आँचल, फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ - ५

९. परती परिकथा, फणीश्वरनाथ रेणु, पृष्ठ - ९

१०. जुलूस, फणीश्वरनाथ रेणु,

११. रेणु का रचना संसार, संपादक - विजय , पृष्ठ २१

१२. आंचलिक उपन्यास और रेणु - डा॰ सत्यनारायण, पृष्ठ ६४